Toppersnotes
Unleash the topper in you

1ST – ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 1

हिन्दी, अग्रेंजी एवं शैक्षिक प्रबंधन

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 1ST GRADE – 2021

हिन्दी, अंग्रेजी एवं शैक्षिक प्रबंधन

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	हिन्दी	
1.	संधि एवं संधि विछेद	1
2.	उपसर्ग	7
3.	प्रत्यय	10
4.	विलोम शब्द	14
5.	अनेकार्थक शब्द	22
6.	शब्द युग्म	25
7.	वर्तनी शुद्धि	36
8.	वाक्य शुद्धि	40
9.	क्रिया	50
10.	पारिभाषिक शब्दावली	52
	अंग्रेजी	
S.No.	**Chapter Name**	**Page No.**
1.	Parts of Speech	
	• Noun	56
	• Pronoun	62
	• Adjective	67
	• Verb	72
	• Adverb	79
	• Preposition	83
	• Conjunction	87
2.	Articles	91

3.	Tense	95
4.	Subject Verb Agreement	100
5.	Narration	105
6.	Voice	111
7.	Suffix & Prefix	116
7.	Confusable Words	
8.	Glossary Official Terms	
9.	Synonyms and Antonyms	
	स्कूल शिक्षा	
1.	शैक्षिक प्रबंधन की अवधारणा	123
2.	राजस्थान में शैक्षिक प्रबंधन	129
3.	शिक्षा प्रबंधन सूचना तंत्र (EMIS)	142
4.	शाला मानचित्रण (School Maping)	144
5.	विद्यालय प्रबंध समिति (SMS)	148
6.	विद्यालय विकास कोष समिति (SDMC)	153
7.	जिला शिक्षा सूचना प्रणाली (DISE)	154
8.	सर्व शिक्षा अभियान (SSA)	159
9.	राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA)	164
10.	समग्र शिक्षा अभियान (समसा)	170

11.	राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्	171
12.	उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (IASE)	173
13.	शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (CTE)	174
14.	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET)	175
15.	ब्लॉक संदर्भ केन्द्र	177
16.	राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल (RSTB)	177
17.	राजस्थान शिक्षा पहल (REI)	178
18.	बलिका फाउण्डेशन (BSF)	179
19.	कस्तुरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय (KGBV)	186
20.	भारत स्काउट एवं गाइड	187
21.	राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल	189
22.	सैनिक स्कूल	190
23.	नवोदय स्कूल	192
24.	ई–मित्र	195
25.	ई–गवर्नेंस/ई–प्रशासन	195
26.	एडूसेट	198
27.	ज्ञानदर्शन	199
28.	ज्ञानवाणी	200
29.	RTE (बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा–2009)	201
30.	राष्ट्रिय शिक्षा नीति – 2019	211

दिए गए QR Code को स्कैन करके टॉपर्सनोट्स अचीवर्स ऐप डाउनलोड करें एवं इस ऐप के माध्यम से किताब में दिए गए QR Codes को स्कैन करके विषय संबंधी अतिरिक्त जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

संधि

- संधि का शाब्दिक अर्थ – मेल/जोडना
- संधि का संधि विच्छेद – सम् + धि
- संधि शब्द का विलोम – विग्रह/विच्छेद
  जैसे :- जगत् + ईश – जगदीश

- संधि – दो या दो से अधिक वर्णो के मेल होने से वर्णो में विकार उत्पन्न होता है और नये सार्थक शब्द की रचना हो जाती है उन्हें संधि कहते है ।

- संधि सदैव समान अर्थ में होती है । विरोधी अर्थो में संधि नहीं होती है ।

- विश्व + अनाथ – विश्वनाथ – विश्व नाथ
  विश्व + अमित्र – विश्वामित्र – विश्व मित्र
  दीन+अनाथ – दीनानाथ – दीन नाथ
  षट् + अंग – षडग
- संधि में सदैव वर्णो में विकार परिवर्तन उत्पन्न होना चाहिए तो संधि होती है । यदि वर्णो में विकार उत्पन्न नहीं होता है तो संधि नहीं होकर वह संयोग कहलाता है ।

- अन् + उचित / अनुचित
  संयोग – निर् + अर्थक / निरर्थक
  सम् + उचित / समुचित

संधि के भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

- स्वर संधि :- यदि स्वर के बाद स्वर आता है तो स्वर में विकार उत्पन्न हो जाता है उसे स्वर संधि कहते है ।

स्वर संधि के पाँच भेद

1. दीर्घ स्वर संधि :- (आ, ई, ऊ)

नियम

1. यदि अ/आ के बाद सवर्ण अ या आ आता है तो दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'आ' हो जाता है ।

2. इ या ई के बाद सवर्ण इ या ई आता है दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'ई' हो जाता है ।

वधूत्सव – वधू + उत्सव
द्राक्षासव – द्राक्षा + आसव
अभीप्सा – वि + ईक्षक
अंबूर्मि – अंबु + ऊर्मि
अन्नाभाव – अन्न + अभाव

- नियम 3 – यदि उ या ऊ के बाद सवर्ण उ या ऊ आता है तो दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'ऊ' हो जाता है ।
- उदाहरण – अ /आ या आ /अ

  दाव + अग्नि – दावाग्नि जगंल की आग
  राम + अयन – रामायण
  पंच + आयत – पंचायत
  मुक्ता + अवली – मुक्तावली
  दीप + अवली – दीपावली

  वडवा + वडव अग्नि – वडवाग्नि समुद्र की आग
  काम + अग्नि – कामाग्नि
  जठर + अग्नि – जठराग्नि पेट की आग
  रवि + इन्द्र – रवीन्द्र
  भू + ऊर्जा – भूर्जा
  कवि + ईश – कवीश
  नदी + ईश – नदीश
  मही + इन्द्र – महीन्द्र
  वधू + उल्लास – वधूल्लास
  चमू + उल्लास – चमूल्लास
  भानु + उदय – भानूदय
  धेनू + उत्सव – धेनूत्सव

2. गुण सन्धि

नियम 1 – यदि अ, आ के बाद इ या ई आये तो ए हो जाता है ।
नियम 2 – अ, आ के बाद उ या ऊ आता है तो दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है ।
नियम 3 – अ, आ के बाद ऋ आता है तो दोनो के स्थान पर 'अर' हो जाता है ।

उदाहरण – यथा

यथा + इष्ट – यथेष्ट
वीर + उचित – उचित
जल + ऊर्मि – जलोर्मि
सूर्य + ऊष्मा – सूर्योष्मा
वर्षा + ऋतु – वर्षर्तु
स्व + इच्छा – स्वेच्छा
गडाका + ईश – गुडाकेश
शीत + ऋतु – शीतर्तु
राज + ऋषि – राजर्षि
महा + ईश – महेश
महा + इन्द्र – महेन्द्र
रमा + ईश – रमेश

गण + ईश – गणेश
राका + ईश – राकेश
हर्षीक+ ईश – हर्षीकेश
वसंत + उत्सव – वसंतोत्सव
गंगा + उत्सव – गंगोत्सव
गंगा + ऊर्मि – गंगोर्मि
समुद्र + ऊर्मि – समुद्रोर्मि
शीत + उत्सव – शीतोत्सव
महा + ऋषि – महर्षि

3. वृद्धि सन्धि

नियम 1 – अ, आ के बाद ए या ऐ आता है तो दोनो के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है।
नियम 2 – यदि अ, आ के बाद ओ या औ आता है तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।
उदाहरण – सदा + एव – सदैव
महा + ऐश्वर्य – महैश्वर्य
महा + ओज – महौज
महा + औघ – महौघ
जल + औघ – जलौघ
महा + औषधि – महौषधि
महा + औषधालय – महौषधालय
एक + एक – एकैक
तथा + एव – तथैव
ज्ञान + औषधि – ज्ञानौषधि
मत + ऐक्य – मतैक्य
लोक + एषणा – लोकैषणा
हित + एषी – हितैषी

अपवाद :-
प्र + ऊढ – प्रौढ
अक्ष + ऊहिनी – अक्षौहिनी
स्व + ईरिणी – स्वैरिणी नदी को कहते है
शुद्ध + ओदन – शुद्धोदन

4. यण् सन्धि

नियम 1 – इ, ई के बाद असमान स्वर आता है तो इ ई के स्थान पर 'य्' हो जाता है ।
नियम 2 – उ, ऊ के बाद असमान स्वर आता है तो उ ऊ के स्थान पर 'व्' हो जाता है ।
नियम 3 – ऋ के बाद असमान स्वर आता है तो ऋ के स्थान पर 'र्' हो जाता है ।

अक्षर से पहले आधा अक्षर आता है तो 99% यण सन्धि होगी ।

उदाहरण
अति + अधिक – अत्यधिक
इति + आदि – इत्यादि
प्रति + उत्तर – प्रत्युत्तर
अति + उत्तम – अत्युत्तम
प्रति + एक – प्रत्येक
अनु + एषण – अन्वेषण
गुरू + ऋण – गुर्वृण
मातृ + आत्मक – मात्रात्मक
प्रति + अर्पण – प्रत्यर्पण
देवी + आराधना – देव्याराधना
स्त्री + उपयोगी – स्त्र्युपयोगी
च्मू + आगमन – चम्वागमन
अधि + अयन – अध्ययन
अधि + आय – अध्याय
अनु + अय – अन्वय
गुरू + आदेश – गुर्वादेश
भानु + आगम – भान्वागम
सु + आगत – स्वागत
सु + आर्थ – स्वार्थ
सु + अच्छ – स्वच्छ
सु + अल्प – स्वल्प
मातृ + आज्ञा – मात्राज्ञा
पितृ + आज्ञा – पित्राज्ञा
मातृ + आदेश – मात्रादेश
भ्रातृ + ऐश्वय – भ्रात्रैश्वर्य
धातृ + अंश – धात्रैश

5. अयादि सन्धि

नियम 1 – ए के बाद कोई भी स्वर आता है तो ए के स्थान पर अय् हो जाता है।
नियम 2 – ऐ के बाद कोई भी स्वर आता है तो ऐ के स्थान पर आय् हो जाता है ।
नियम 3 – ओ के बाद कोई स्वर आता है तो ओ के स्थान अव् हो जाता है ।
नियम 4 – औ के बाद कोई स्वर आता है तो औ के स्थान पर आव् हो जाता है ।

उदाहरण
गो + एषणा – गवेषणा
द्यौ + एव – द्यावेव
ने + अन – नयन
गै + अन – गायन
पो + इत्र – पवित्र
श्रो + अन – श्रवण
रौ + अन – रावण
विधै + अक – विधायक
चे + अन – चयन
भो + अन – भवन
पो + अन – पवन
धौ + अक – धावक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि – व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आता है तो व्यंजन मे विकार उत्पन्न हो जाता है उसे व्यंजन सन्धि कहते है ।

नियम 1 –किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि काई स्वर आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

दिक्	+ गज	– दिग्गज
तत्	+ रूप	– तद्रूप
जगत्	+ ईश	– जगदीश
वाक्	+ ईश्वर	– वागीश्वर
वाक्	+ ईश्वरी	– वागीश्वरी
उत्	+ आहरण	– उदाहरण

नियम 2 –किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या य,व, र वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

सत्	+ धर्म	– सद्धर्म
षट्	+ रस	– षड्रस
षट्	+ रिपु	– षड्रिपु
अप्	+ ज	– अब्ज (कमल)
अप्	+ द	– अब्द (बादल)

नियम 3 – यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद 'ह' आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है और ह के स्थान पर भी उसी वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

उत्	+	हार	– उद्धार
तत्	+	हित	– तद्धित
रत्नमुट्	+	हिंसा	– रत्नमुंडिसा
वाक्	+	हरि	– वाग्धरि

नियम 4 – यदि किसी 'वर्ग के चतुर्थ वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का चतुर्थ वर्ण आता तो चतुर्थ वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

वुध्	+ अध	– बुद्धि
सिध्	+ ध	– सिद्ध
लभ्	+ धि	– लब्धि
युध्	+ ध	– युद्ध

नियम 5 – यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद किसी वर्ग का पंचम वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर भी उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

जगत्	+ नाथ	– जगन्नाथ
सत्	+ मति	– सन्मति
मृत	+ मय	– मृन्मय
मृत्	+ मूर्ति	– मृन्मूर्ति
वाक्	+ मय	– वाङ्मय

नियम 6 – यदि म के बाद क से लेकर म तक कोई वर्ण आता है तो म का अनुस्वार हो जाता है या फिर अगले वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

सम्	+ धि	– संधि/ सन्धि
सम्	+ गठन	– संगठन
सम्	+ जय	– संजय
अलम्	+ कार	– अलंकार
शम्	+ कर	– शंकर
सम्	+ कर	– संकर
सगंठन	+ सङ्गठन	– सडठन
अलंकार	+ अलङ्कार	– अलडकार

नियम 7 – यदि म के बाद य र ल व ष श स ह आता है तो म के स्थान पर केवल अनुस्वार हो जाता है ।

उदाहरण –

सम्	+ यम	– संयम
सम्	+ शोधन	– संशोधन
सम्	+ सार	– संसार
सम्	+ विधान	– संविधान
सम्	+ हार	– संहार

नियम 8 – सम् उपसर्ग के बाद क धातु से बने हुए शब्द
(कार, करण, कर्ता, कर) आदि आता है तो म का अनुस्वार हो जाता है और बीच में स् का आधम हो जाता है ।

उदाहरण –

सम्	+ कार	– संस्कार
सम्	+ कृत	– संस्कृत
सम्	+ करण	– संस्करण
सम्	+ कृति	– संस्कृति

नियम – 9 यदि परि उपसर्ग के बाद कृ धातु से बने हुए शब्द (कार, कर्ण, कर्ता, कर, कृति) आते हैं तो बीच में मुर्धा ष् का आगम हो जाता है ।
कर्त्तव्य – सही कर्त्तव्य, कर्त्ता – सही कर्ता

उदाहरण –
परि + करण – परिष्करण
परि + कार – परिष्कार
परि + कर्ता – परिष्कर्ता

नियम 10 – यदि त् द् के बाद स्थ आता है तो स्थ के स् लोप हो जाता है ।
उदाहरण –
उत् + स्थान – उत्थान
उत् + स्थित – उत्थित जागना
उत् + स्थानम् – उत्थानम्

नियम 11 – यदि त द् के बाद क ख प फ त स आता है तो त्, द् के स्थान पर त् हो जाता है ।
उदाहरण –
उद् + कर्ष – उत्कर्ष
उद् + तम – उत्तम
तद् + पुरूष – तत्पुरूष
संसद् + सत्र – संसत्सत्र
उद् + खनन – उत्खनन

नियम 12 – यदि निस् दुस् उपसर्ग के बाद क, ट्, प, फ आता है तो निस् दुस् के स् के स्थान पर मुर्धा ष् हो जाता है ।
उदाहरण –
निस् + कर्ष – निष्कर्ष
निस् + टंकार – निष्टंकार (आवाज न करना)
दुस् + कर्म – दुष्कर्म
दुस् + पाप – दुष्पाप
दुस् + फल – दुष्फल

नियम 13 – ष के बाद त, थ आता है तो त के स्थान पर ट, एवं थ के स्थान पर ठ हो जाता है ।
उदाहरण – सृप् + ति – सृष्टि
दृष् + ति – दृष्टि
हष् + त – हष्ट
पुष् + त – पुष्ट
षष् + थ – षष्ठ

नियम 14 – यदि इ/उ के बाद स आता है तो स के स्थान पर ष हो जाता है ।
उदाहरण – अभि +सेक – अभिषेक
नि + संग – निषंग
नि + सेध – निषेध
वि + सम – विषम
सु + समा – सुषमा

नियम 15 - यदि इ/उ के बाद स्थ आता है तो स्थ के स्थान पर ष्ठ हो जाता है ।
उदाहरण – नि + स्था – निष्ठा
प्रति + स्था – प्रतिष्ठा
प्रति + स्थित – प्रतिष्ठित
युधि + स्थिर – युधिष्ठिर

नियम – 16 यदि किसी स्वर के बाद अगर छ आता है तो बीच में च् का आगम हो जाता है ।
उदाहरण – अनु + छेद – अनुच्छेद
वि + छेद – विच्छेद
परि + छेद – परिच्छेद (चारों तरफ का)
मातृ + छाया – मातृच्छाया
लक्ष्मी + छाया – लक्ष्मीच्छाया

नियम 17– यदि त्/द के बाद अगर च, छ आता है तो त् द् के स्थान पर भी च् हो जाता है ।
उदाहरण – सत् + चित – सच्चित
सत् + चरित्र – सच्चरित्र
उत् + छेद – उच्छेद
उत् + चारण – उच्चारण
उत् + छिन्न – उच्छिन्न
शरत् + चन्द्र – शरच्चन्द्र

नियम 18 – यदि त्, द् के बाद ज या झ आता है तो त् द् के स्थान पर भी ज् हो जाता है।
उदाहरण –
विद्युत् + ज्योति – विद्युज्जयोति
जगत् + ज्वाला – जगज्जवाला (जगत की ज्वाला)
उत् + ज्वल – उज्जवल
वहत् + झंकार – वहज्झंकार
महत् + झंकार – महज्झंकार

नियम 19 –यदि क, त्, द् के बाद ट, ठ हो तो त् द् के स्थान पर भी ट् हो जाता है ।
उदाहरण –
तत् + टीका – तट्टीका
वृहत् + टीका – वृहट्टीका

2. त्, द् के बाद ड, ढ हो तो ड् हो जाता है ।

उदाहरण –

उत् + डयन – उड्डयन
उत् + डीन – उड्डीन

नियम 20 – त् द् के बाद ल हो तो त् द् के स्थान पर भी ल् हो जाता है ।

उदाहरण –

तत् + लीन = तल्लीन
तत् + लय = तल्लय
उत् + लेख = उल्लेख
उत् + लिखित = उल्लिखित

नियम 20 – यदि न् के बाद ल् हो तो न् का ल् हो जाने पर न् से पूर्व आए वर्ण पर अर्द्धचन्द्र बिन्दु का आगम हो जाता है ।

उदाहरण –

विद्वान् + लिखति – विद्वाँल्लेख
महान् + लिखति – महाँल्लिखति
महान् + लेख – महाँल्लेख
विद्वान् + लेख – विद्वाँल्लेख

नियम 21 – यदि त् द् के बाद ष आता है तो त, द् के स्थान च् हो जाता है और ष के स्थान पर छ हो जाता है ।

उदाहरण –

तत् + शिव – तच्छिव
उत् + श्वास – उच्छ्वास
श्रीमत् + शरत् + चन्द्र – श्रीमच्छरच्चन्द्र

नियम 22 –यदि अहन् के बाद र से भिन्न वर्ण आता है तो न् के स्थान पर र् हो जाता है ।

उदाहरण –

अहन् + पति – अहपति (दिन का स्वामी)
अहन् + ऐश्वर्य – अहरैश्वर्य
अहन् + गण – अहगण
अहन् + अहन् – अहरह

अहन् के बाद अहन आता है तो अन्तिम न् का लोप हो जाता है।

नियम 23 –यदि अहन् के बाद र वर्ण आता है तो अहन् के स्थान पर अहो हो जाता है ।

उदाहरण–

अहन् + रथ – अहोरथ
अहन् + रूप – अहोरूप
अहन् + रात्रि – अहोरात्रि – अहोरात्र
अहोरात्र द्वन्द्व समास

नियम 24 – ऋ, र ष के बाद न का ण हो जाता है ।

उदाहरण –

प्र + नाम – प्रणाम
परि + नाम – परिणाम
परि + नय – परिणय
ऋ + न – ऋण
राम + अयन – रामायण दीर्घ
मीरा + अयन – मीरायण दीर्घ

नियम 25 – यदि म से पहले च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग या श स, ह, ल आता है तो न का ण नहीं होता है ।

उदाहरण –

रस + अयन – रसायन
दक्षिण + अयन – दक्षिणायन
राजा + अयन – राजायन

वर्णलोप –

पक्षिन् + राज – पक्षिराज
प्राणिन् + नाथ – प्राणिनाथ
युवन् + राज – युवराज
प्राणिन् + शास्त्र – प्राणिशास्त्र

विसर्ग सन्धि (:)

विसर्ग सन्धि – यदि विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आता है तो विसर्ग स्थान पर विकार उत्पन्न हो जाता है उसे विसर्ग सन्धि कहते है ।

नियम 1 – यदि विसर्ग के बाद त, थ आता है तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है ।

उदाहरण –

नमः + ते – नमस्ते
मनः + ताप – मनस्ताप
शिरः + त्राण – शिरस्त्राण (सिर की रक्षा करना)
बहिः + थल – बहिस्थल
निः + तेज – निस्तेज
शिरः + त्राण – शिरस्त्राण

नियम 2 – यदि विसर्ग के बाद च, छ आता है तो विसर्ग के स्थान पर श् हो जाता है ।

उदाहरण –

निः + चय – निश्चय
निः + छल – निश्छल
मनः + चिकित्सक – मनश्चिकित्सक
दुः + छल – दुश्छल
आः + चय – आश्चर्य
मनः + चिकित्सा –मनश्चिकित्सा

Nouns

A noun is a name of person, place, thing, idea, action a quantity.

Types

- **Proper noun** – Denotes a particular person, place, thing.
  Ex. Akshay, Pooja, Ankita
- **Common noun** – Is the name given in common to every person or thing of the same class or kind.
  Ex. Boy, girl, company etc.
- **Collective noun** – Denotes a group or collective of similar individuals considered as one complete whole.
  Ex. Class, Staff, Army, Parliament etc.
- **Material noun** – Denotes matter or substance of which a thing is made.
  Ex. Iron, gold, silver, etc.
- **Abstract noun** – Is usually the name of a quality, action or state considered apart from the object to which it belongs.
  Ex. Virtue, darkness, kindness, happiness etc.
- **Singular noun** – Boy, girl, man, car etc.
- **Plural noun** – Boys, girls, men, cars etc.
- **Countable nouns** – Are the names of objects, people etc. that we can count.
  Ex. Book, doctor, horse, apple
- **Uncountable nouns** – Are the names of things which we can't count.
  They mainly denotes substance and abstract things.
  Ex. Milk, Oil, Sugar, Gold, Honesty etc.

Noun Numbers –

Singular noun ending	Plural noun ending	Singular	Plural
1) -s, -ss, -ch, -x, -zz	-es	Man	Men
Ex. Focus	Focuses	Woman	Women
Princess	Princesses	Mouse	Mice
Box	Boxes	Fish	Fish or Fishes
Buzz	Buzzes	A sheep	Ten sheep
2) -o	-s or –es	Child	Children
Ex. Hero	Heroes	Ox	Oxen
Piano	Pianos	A woman doctor	Several women doctors
Potato	Potatoes	A bookcase	Two bookcase
3) Consonant +y	-ies	An Indian take away	Two Indian take away
Baby	Babies	A passer by	Several passers by
Hobby	Hobbies	Glassful	Glassful is
4) Vowel +y	-s	Spoonful	Spoonful is
-key	-keys		
-ray	-rays		
5) -F	-S or –ves		

Ex. hoof	Hoofs or hooves		
Dwarf	Dwarfs or dwarves		
Thief	Thieves		
Roof	Roofs		
6) –fe	-ves		
- Knife	-Knives		
- Life	-Lives		
7) On	A	Ex. • Since I had never seen a falling star, seeing one on my honeymoon was real Phenomena. [Use Phenomenon in place of Phenomena] • As we all know sunrise is a great phenomena. (×) a great(Phenomenon) (√)	
Phenomenon Criterion	Phenomena Criteria		

Singular (Is)	**Plural (es)**
Analysis	Analyses
Diagnosis	Diagnoses
Casis	Cases
Thesis	Theses
Crisis	Crises

Ex.

- During the real estate crises; homes prices were extremely low but few people had money to buy.

Ans. Crises (×) → Crisis (✓)
Plural Singular

- The widow who lies near his house is passing through many crisis. (×)

Crisis (×) → Crises (✓)
Singular Plural

Ans. Correct is **Crises.**

US – I

Cactus	-	Cacti
Focus	-	Foci
Fungus	-	Fungi
Nucleus	-	Nuclei
Syllabus	-	Syllabi ; Syllabuses
Radius	-	Radii

Ex.

- We need to improve our textbooks and syllabus in such a way that students do not need to rely on the cheap notes.

Ans. Syllabus (×) - Syllabi (✓)

- All the cactus were in flower, so that the desert was a riot of color.

Ans. Cactus (×) - Cacti (✓)
(Singular) (Plural)

Cactus गलत है क्योंकि All Plural है तो Noun भी Plural होगा ।

Um - A

Datum - Data

Medium - Media

Memorandum - Memoranda

Ex.

- We can solve these problems by using method of floating datum DMO superposition. (✓)

Ans. Datum (Sing.) (✓) – क्योंकि यहाँ एक specific method (floating method) की बात हो रही है क्योंकि specific method (singular) है तो (datum (sing.)) noun भी sing. होगा ।

- He copied the relevant data out of the encyclopedia.

Ans. Data (Plural) (✓) – काम का data collect किया मतलब बहुत सारा data collect किया होगा ।

Important Rules –

Rule 1 – We always use singular verb with uncountable nouns.

- Plural of these words does not exist.
- Some examples of uncountable nouns are –

Machinery	Scenery	Information	Luggage
Advice	Poetry	Evidence	Help
Furniture	Bread	Wood	Fuel
Hair	Crockery	Cash	Money
Bakery	Behavior	Dirt	Jewelry
Knowledge	Wastage	Dust	Clothing
Mischief	Cost		

Note: - These nouns will not take A, An, many, few number of [plural verb] → they take singular verb.

Ex.

- The sceneries (Uncountable Noun) of Kashmir have (Plural Verb) enchanted us. (×)

Ans. The scenery of Kashmir has enchanted us. (✓)

- She gave two jewelries. (correct – jewelry or a piece of jewelry)
- His hairs are black. → His hair is black. (✓)
- I ate three breads today.
  (Correct – Bread or three slices of bread)

Rule 2 – Certain noun exist in plural forms only. Thus 's' cannot be removed from such nouns.

- They take plural verb form.

Ex.

Scissors	Jeans	Pincers	Shorts
Spectacles	Remains	Congratulations	Pliers
Binoculars	Pajamas	Pants	Tweezers
Tongs	Earnings	Scales	Savings
	Trousers	Tights	
Hanks	Socks	Wages	

Ex.

- Where are my pants? (Plu.)
- Where are the tongs? (Plu.)
- Alms were given to beggars.
- She forgot her spectacle here.
  (Correct → Spectacles)

Rule 4 – Some nouns are singular in meaning, but they are used as plural nouns and always take a plural verb.

[cattle, gentry, vermin, peasantry, artillery, people, company, police]

Ex.

- The cattle is grazing in the ground. (×)
  Correct – Cattle (Plural) → are Plural (✓)
- Police has controlled the situation.
  Correct – Has (×) → Have (✓)
- The children are playing in the field.
- large farms, cattle are usually marked with brand.
  (cattle (noun plural है इसलिए plural – farms (✓))

Rule 5 – Some nouns like – mathematics, physics, dynamics, ethics, linguistics, meta physics, optics, economics, news, polities, mumps, measles, rickets, athletics, mechanics etc. are in plural forms but used as a singular noun.

Ex.

- Mathematics is the science of quantity.
- Bad news travels fast.
- Mumps has been nearly eradicated in our country.
- Billiards is my favorite game.

Rule 6 – Some nouns are known as common gender nouns. They can be used for either sex; male or female.

These are called dual gender nouns. Such nouns are: teacher, student, child, clerk, candidate, advocate, worker, writer, author, leader, musician, politician, enemy, client, president, person, neighbor etc.

Rule 7 – Some nouns are used for specifically for feminine gender only.

Ex.

- blonde, maid, mid wife, coquette etc.

Now a day nouns 'bachelor' and 'virgin' are being used for masculine and feminine gender as well.

Ex.

- He is coquette. (×)
  She is coquette. (✓)

Rule 8 – If the same noun is repeated after preposition, the noun will be singular.

[noun (s) + preposition + noun (s)]

Ex.

- Town after town
  (Noun) (Prep.) (Noun)
  Was/ were devastated.

Was(✓) Were (×)

- Row upon row of pink marble look (×) /looks (✓) beautiful.
- He was reading pages after pages of the book.
  Correct – page after page

Rule 9 – Some nouns like → Deer, sheep, series, fish, crew, team, jury, aircraft, consent etc.

Take the same form both in singular and plural.

Ex.

- This cricket team is best for T-20 matches.
- The crew is large.
- All the crew were saved.
- One sheep is grazing.
- Two sheep are grazing.

Rule 11 – In case of a very young child, insect or other small creature we use neuter gender.

Ex.

- The baby wants his bottle. (its)
- The child has his bottle. (its)

Rule 13 – Don't say "family members / cousin brother" or "cousin sister" but say →

- The members of the family. (✓)
- He or she is my cousin. (✓)
- He is my English teacher. (✓)
- He is my teacher of English. (×)
- He is my mathematics teacher. (×)
- He is my teacher of math's. (✓)

Grammar Rules for Possessive Nouns

Rule 1 – Making singular nouns possessive – Add an apostrophe+'s'

To most singular nouns and to plural nouns that don't end in 's'.

Ex.

- Singular noun – Kitten's toy, Joe's car, James's book/ James's
- Plural not ending – Women's dresses, sheep's pasture in 's'.

Rule 3 – Making hyphenated nouns and compound nouns plural –

Ex.

- My mother-in-law's recipe for meatloaf is my husband's favorite.
- The United States post office's stamps are available in rolls or pockets.

Rule 6 – Possessive sign ('s) is also used in the following structures –

Ex.

- With the names of dignified objects –
  Heaven's will – Earth's gravity
  Country's call – Sun's ray's

- With the name of personified objects –
  Duty's call – Death's doctor
  Fortune's favour – Nature's law
- With the noun indicating time, weight, distance, value pace etc.
  - An hour's journey – Ten pound's weight
  - A needle's point-Three lakh's worth

Rule 7 – The double possessive should not be used –

Ex.

- Ram's sister's marriage is on 2nd November. (×)
  The marriage of Ram's sister on 2nd Nov. (✓)
- The President's brother's wife died yesterday. (×)
  The wife of President's brother died yesterday. (✓)

Rule 8 – Possessive sign in also used with the following pronouns –

Anyone	Anybody	Nobody
Somebody	No one	Each other
Everyone	Everybody	
One another	Someone	

Ex.

- The student should follow the suggestions of their teacher and not somebody else.
  Correct – Somebody else's

Rule 9 – When the two nouns are used after one of the possession or ownership is not shown by possessive sign ('s) but it is shown by preposition of –

Ex.

- One of my friend's wives was killed in an accident. (×)
  The wife of one of my friends was killed in an accident. (✓)
  I saw the reception of president in Jaipur. (✓)

शैक्षिक प्रबंधन की अवधारणा व कार्य

शैक्षिक प्रशासन

शैक्षिक प्रबंधन का शाब्दिक अर्थ

शैक्षिक प्रबंधन दो शब्दों से मिलकर बना है। शैक्षिक से तात्पर्य – शिक्षा एवं प्रबंधन का अर्थ व्यवस्था से है।

- सामान्य रूप से प्रशासन का तात्पर्य 'व्यवस्था' से होता है और शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ी हुई व्यवस्था शैक्षिक प्रशासन के अंतर्गत आती है शैक्षित प्रशासन एवं मानवीय प्रक्रिया है। शिक्षा का समुचित प्रबंध करना ही शैक्षिक प्रशासन कहलाता है।
- शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है तथा उससे मिलने वाला लाभ और शिक्षा का प्रसार शैक्षिक प्रशासन से जुडे अभिकरणों (संस्थानों) की कुशलता तथा गतिशीलता पर निर्भर करता है।
- शिक्षा प्रशासन शिक्षण तथा सीखने के कार्यक्रमो के विकास से प्रोत्साहन प्रदान करता है।
- शैक्षिक प्रशासन का संबंध केवल मानवीय रूपों से ही नही अपितु विद्यालय के भौतिक तत्वों से भी रहता है।
- प्रशासन भौतिक और मानवीय तत्वों के बीच समन्वय स्थापित करके शिक्षा प्रक्रिया को भली–भाँति/सुचारू, रूप से संचालित करता है।
- शैक्षिक प्रशासन को समझाते हुए डॉ. एस.एन. मुखर्जी ने अपनी पुस्तक सैकेण्डरी स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन इट्स प्रिंसिपल्स एण्ड फंक्शन्स इन इण्डिया में लिखा है –
- शिक्षा प्रशासन वस्तुओं/सामग्री के साथ–साथ मानवीय संबंधो की व्यवस्था से संबंधित है अर्थात् व्यक्तियों के मिल जुलकर और अच्छा कार्य करने से संबंधित है। वास्तव में इसका संबंध मानवीय जीवों से अपेक्षाकृत अधिक तथा अमानवीय वस्तुओं से कम होता हैं।

स्टेफन नेजेविज

शैक्षिक प्रशासन को एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है। जिसका संबंध किसी शैक्षिक संस्था में पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधन शक्तियों के निर्माण, सुरक्षा तथा समन्वय से है।

शैक्षिक प्रशासन की विशेषताएँ

- शैक्षिक प्रशासन शिक्षा से संबंधित सभी क्रियाओं एवं साधनों के सम्पूर्ण उपयोग, संगठन, आदेश तथा जनसहयोग के द्वारा वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करता है।
- शिक्षा प्रशासन सभी प्रयासो एवं संस्थानों को संगठित करता है।
- शैक्षित प्रशासन का संबंध विभिन्न व्यक्तियों, शिक्षको, छात्रों तथा अभिभावकों एवं जनता के प्रयासों को सम्मिलित करने से है।
- शैक्षिक प्रशासन शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है।

शैक्षिक प्रबंधन कुल चार तत्वों से मिलकर बना होता है जो निम्न है

शैक्षिक प्रबंधन के कुल प्रकार – 04

- भौतिक तत्व – विद्यालय भवन, खेल मैदान, फर्नीचर, पुस्तकालय, स्कूल में स्थित अन्य सामग्री।
- मानवीय तत्व – प्रधानाचार्य, शिक्षक, छात्र, शिक्षा अधिकारी, अन्य जन।
- वित्तीय क्षेत्र – अनुदान, कोष, चन्दा, फीस।
- सिद्धांतो का प्रबंध – नियम, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ, समय सारणी।

शैक्षिक प्रशासन के रूप

राष्ट्रीय प्रशासनिक व्यवस्था की तरह की शैक्षिक प्रशासन के भी 2 रूप प्रचलित है–

1. एकतंत्रात्मक/सत्तात्मक/सर्वहारा शैक्षिक प्रशासन
2. प्रजातांत्रिक शैक्षिक प्रशासन

शैक्षिक प्रशासन के घटक/कारक

शैक्षिक प्रशासन के घटक भी 2 प्रकार के होते है।–

(1) व्यक्तिगत कारक

(i) प्रशासन
(ii) सहयोगी
(iii) छात्र
(iv) उनके पारस्परिक संबंध
(v) कर्मचारियों का सांस्कृतिक प्रवेश

(2) वातावरणीय कारक

(i) सरकार की प्रकृति – सरकार के कार्य, आर्थिक प्रावधान और शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान
(ii) सामुदायिक विशेषताएँ – सामुदायिक चरित्र, समुदाय की प्रकृति, भौतिक संसाधन, संस्थाए एवं संगठन शक्ति– संघर्ष, दूसरे या बाह्य समुदायों का प्रभाव, जीवन की जटिलता आदि।
(iii) सामाजिक रीतियाँ – शैक्षिक मूल्य, नेतृत्व संरचना और व्यवस्था का स्तर

शैक्षिक प्रशासन के सिद्धान्त

1. मानवीय व्यवहार
2. भौतिक तत्वों का उचित प्रयोग
3. सहानुभूतिपूर्ण सिद्धान्त
4. विद्यालय प्रशासन का आधार शिक्षादर्शन को बढाना
5. प्रशासनिक भावना का आशावादी होना
6. समन्वय का सिद्धान्त
7. छात्रों और शिक्षको के व्यक्तित्व का आदर करना
8. लचीलापन और अनुकूलता का सिद्धान्त
9. शिक्षकों का व्यावसायिक विकास
10. प्रशासन साधन है, साध्य नहीं है।
11. योजना निर्माण
12. सहानुभूति सहयोग तथा उत्तरदायित्व
13. विचार विनिमय में स्वतंत्रता
14. स्वशासन एवं नेतृत्व का अवसर
15. कार्यकुशलता के स्तर को बनाये रखना चाहिए।
16. उद्देश्यों की एकता
17. मूल्यांकन का प्रावधान

शैक्षिक प्रबंध

शिक्षा प्रक्रिया के विस्तार का नियोजन अथवा शिक्षा से संबंधित मानवीय शक्ति और भौतिक संसाधनों का समन्वय एवं नियोजन शैक्षिक प्रबंध कहलाता है।

हेनरी फेमोल ने अपनी पुस्तक " General and industrial Management" में कुल 14 सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है।

विशेष – फेमोल को "आधुनिक प्रबंध का जनक" कहा जाता है।

हेरोल कुन्टज – शैक्षिक प्रबंध औपचारिक रुप से गठित समूहों के माध्यम से तथा उसके साथ कार्य करने की कला है।

एनसाइक्लोपिडिया ऑफ एजूकेशनल रिसर्च – शिक्षा प्रशासन वह प्रक्रिया है जिसमें कार्यरत लोगों के प्रयासों को इस प्रकार समन्वित किया जाता है, जिससे मानवीय गुणों का प्रभावी ढंग से विकास हो।

- यह एक गत्यात्मक प्रक्रिया है।
- संसाधनों के बीच संबंध है।
- यह अंतर विषयक उपागम है।

C.W. विल्सन

- प्रबंध एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मानवीय शक्तियों के प्रयोग एवं निर्देशन की प्रक्रिया है।

हेनरी फेयोल

- प्रबंध का अर्थ पूर्वानुमान लगाना तथा नियोजन करना, उपदेश देना, समन्वय करना एवं नियंत्रण करना है।

F.W. टेलर

- प्रबंध यह जानने की कला है कि क्या करना है तथा उसे करने का तरीका क्या है?

S.S. माथुर

- अच्छे विद्यालय संगठन से हमारा तात्पर्य यही है कि संगठन ऐसा हो जिसके द्वारा विद्यालय के विभिन्न अंग प्रत्यंग मिलकर अच्छी शिक्षा प्रदान करने में सक्रिय रहे ।
- शिक्षा के विकास के लिए व्यवस्थित योजना बनाना शैक्षिक नियोजन कहलाता है।
- शैक्षिक नियोजन देश के लिए उत्तम चरित्र वाले नागरिको को तैयार करने के लिए होता है।
- कोठारी आयोग में लिखा है कि भारत का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है।

शैक्षिक प्रबंध की विशेषताएँ

1. नियोजित व्यवस्था
2. शैक्षिक प्रबंध एक समन्वयकारी संसाधन
3. यह एक समूह वाचक संज्ञा है।
4. प्रबंध एक सामाजिक क्रिया है।
5. यह एक अदृश्य कौशल है।
6. प्रबंध एक सार्वभौमिक क्रिया है।
7. यह मूल क्रिया है या मूल रूप से क्रिया है।
8. यह एक उद्देश्य क्रिया है।

9. प्रबंध का दायित्व काम करना है।
10. यह सतत् प्रक्रिया है।

शैक्षिक प्रबंध के सिद्धान्त

1. नियोजन का सिद्धान्त
2. समन्वय का सिद्धान्त
3. आदेश की एकता
4. सौपानिक/पद सौपन का सिद्धान्त
   (उच्च अधिकारियों की शक्ति का वर्णन)
5. अपवाद का सिद्धानत
6. लोचशीलता का सिद्धानत
7. अनुकूलता/अनुरूपता का सिद्धान्त
8. औपचारिकता का सिद्धानत
9. दायित्व एवं अधिकार का सिद्धान्त
10. निर्देशन का सिद्धानत
11. संतुलन का सिद्धान्त
12. नियंत्रण के विस्तार एवं सिद्धान्त
    (ग्रेकुनस के अनुसार यह संख्या 5 से 6 हो सकती है। कर्नल उर्विक के अनुसार संगठन के उच्च स्तर पर अधिनस्थो की संख्या 4 तथा निम्न स्तर पर यही संख्या 8 से लेकर 12 तक हो सकती है।)

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं शैक्षिक प्रबंध

1. 1986 की शिक्षा नीति में आयोजन एवं व्यवस्था के पुनर्गठन को उच्च प्राथमिकता दी गई। 1986 की शिक्षा नीति के अनुसार कुछ विशेष ध्यान रखने योग्य सिद्धान्त भी है।
2. शिक्षा की आयोजना और प्रबंध का दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य तैयार करना और उसे देश की विकासात्मक और जनशक्ति विषयक आवश्यकता से जोड़ना।
3. विकेन्द्रीकरण तथा शिक्षा संस्थाओं में स्वायतता की भावना।
4. लोक भागीदारी को प्रधानता देना जिसमें गैर सरकारी अभिक्रमो का जुडाव तथा स्वैच्छिक प्रयास शामिल हो।
5. अधिकारिक संख्या में महिलाओ को शामिल करके आयोजन व प्रबंध को मबूत करना।
6. प्रदत्त उद्देश्यो और मानदण्डो के संबंध में जवाबदेही के सिद्धानत की स्थापना

शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंध के कार्य

1. संगठन के लक्ष्यो की व्याख्या करना
2. नियोजन (P)
3. संगठन (O)
4. कर्मचारी की नियुक्ति (S)
5. निर्देशन/संचालन (D)
6. समन्वय/सामजस्य (Co)
7. आलेखन/रिपोर्ट तैयार करना (R) सूचना देना

8. बजट निर्माण/बजट तैयार करना (B)
9. नैतिक स्तर का निर्माण
10. मूल्यांकन

शिक्षा के क्षेत्र में या शैक्षिक प्रबंध में नियोजन का सूचपात 'लूधर गुलिक' ने किया और प्रबंध के कार्यो के लिए POSDCARB सूत्र दिया।

लुथर गुलिक के POSDCORB का अर्थ (कुल सात कार्य)

1. P – Planing (नियोजन)
2. O—Organizing (संगठन)
3. S- Staffing (नियुक्तियाँ)
4. D – Directing (निर्देशन)
5. CO – Coordinating (समन्वय)
6. R – Reporting (रिपोर्ट तैयार करना)
7. B – Budgeting (बजट तैयार करना)

हेनरी फेमोल ने प्रबंध के पाँच महत्वपूर्ण कार्य बताये है, जो निम्न है

फेमोल का सूत्र – POCCC

1. P - Planing (नियोजन)
2. O – Organizing (संगठन)
3. C – Commanding (प्रभावशाली)
4. C – Co-ordination (समन्वय)
5. C – Control (नियंत्रण)

विद्यालय प्रबंध संरचना के पद

- सोपान में सर्वोच्च स्थान प्रधान (प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक) का होता है।
- शिक्षा मंत्री विद्यालय प्रबंध का मानवीय घटक नही होता है।
- विद्यालय प्रबंध का मुख्यालय विद्यार्थियों का सर्वागिण विकास करना होता है।
- विद्यालय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए स्वानुशासन को अपनाना चाहिए।
- माध्यमिक शिक्षा में मंडल स्तर पर शैक्षिक प्रबंध के कार्यो को देखने के लिए उपनिर्देशक स्तर का अधिकारी होता है तथा जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा) होता है।
- प्रारम्भिक शिक्षा में जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक शिक्षा) होता है तथा प्रारम्भिक शिक्षा के लिए ब्लॉक (खण्ड) स्तर पर खण्ड शिक्षा अधिकारी (BED) होता है।
- निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करने की कल्पना प्रजातांत्रिक शैक्षिक प्रशासन में की गई थी।
- नियोजन को अलग–अलग स्तरों में बांटा गया है।
  जैसे केन्द्रीय स्तर, राज्य स्तर, जिला स्तर एवं स्थानीय स्तर